निसर्ग प्रस्तुति

॥ वाल्मीकि जयन्ती ॥

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला रचित
'राम की शक्तिपूजा' पर आधारित

एक भव्य नाट्यप्रयोग

आदिशक्ति रामशक्ति

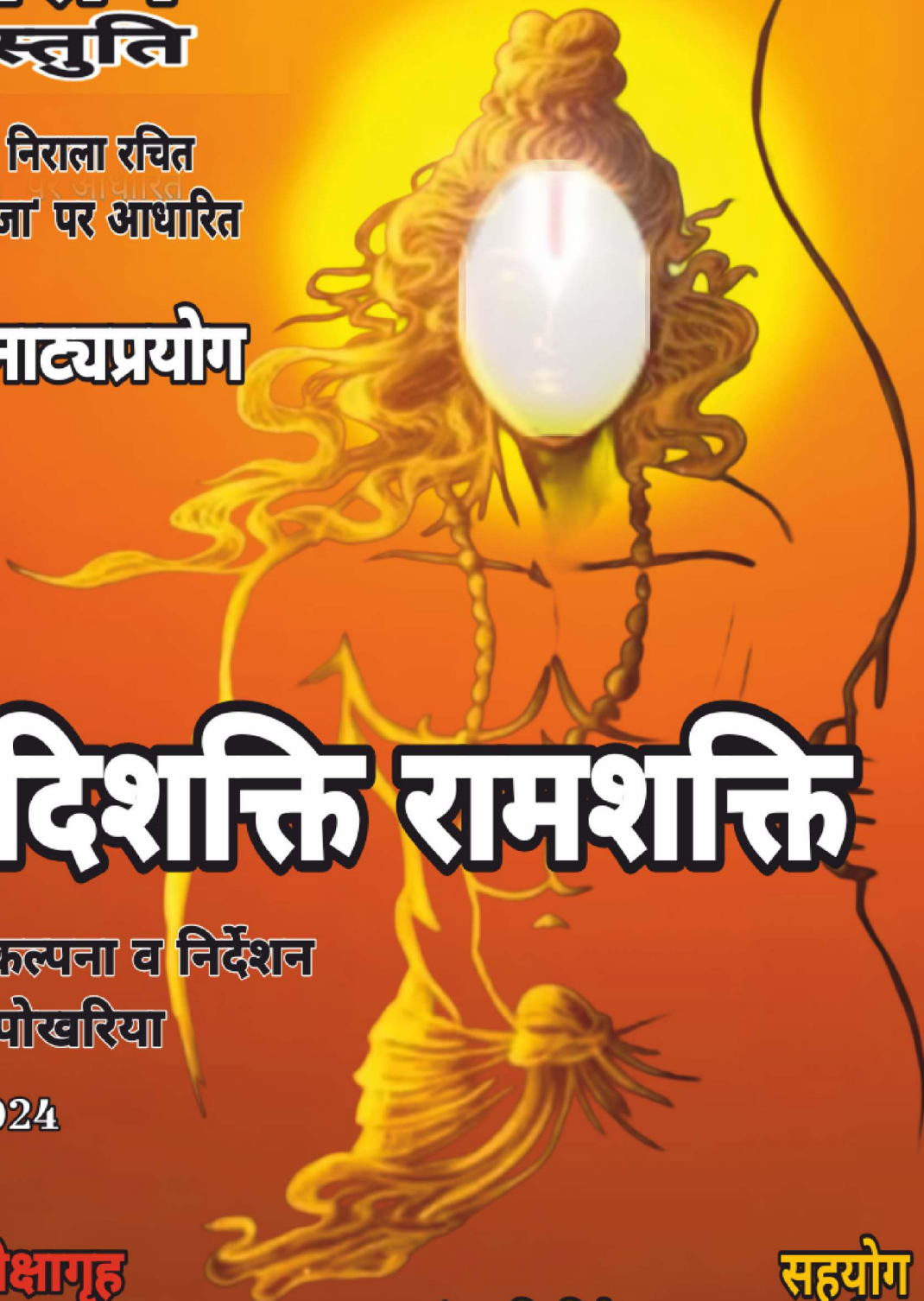

आलेख, परिकल्पना व निर्देशन
ललित सिंह पोखरिया

17 अक्टूबर 2024
सायं 06:50

सन्त गाडगे प्रेक्षागृह
उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी
गोमती नगर - लखनऊ

सहयोग
संस्कृति निदेशालय उत्तर प्रदेश

चलो महाकुम्भ प्रयागराज २०२५

'निसर्ग' : सी - 136/14 शिवानी विहार कल्याणपुर लखनऊ 226022
मो. 9839 020107 / ईमेल: nisargtheatregroup@gmail.com / वेबसाइट : www.lalitnisarg.org.in

fulx lf{kIr ifjp;

- रंगमंच एवं इतर सृजन माध्यमों से व्यक्ति और समाज के मानवीय विकास में विगत 22 वर्षों से सतत् सक्रिय नाट्य संस्था।
- बालकों और युवाओं को नाट्य कला का ज्ञान देने और नैतिकतापरक व्यक्तित्व विकास हेतु नाट्य प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- शास्त्रीय (संस्कृत) नाट्य परम्परा के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार द्वारा भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतु नाट्य कार्यशालाओं, नाट्य–मंचन एवं गोष्ठियों का आयोजन।
- लोकनाट्य परम्परा के प्रचार–प्रसार द्वारा भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतु नाट्य कार्यशालाओं, नाट्य–मंचनों, गोष्ठियों एवं कलाकार सम्मान कार्यक्रमों का आयोजन।
- श्रेष्ठ साहित्य के द्वारा व्यक्ति और समाज के गुणात्मक विकास हेतु विख्यात साहित्यकारों की रचनाओं का मंचन।
- संवेदनशीलता, सकारात्मकता और नैतिकता के संरक्षण हेतु रंगमंच के महत्वपूर्ण नाटकों का मंचन।
- बालकों का व्यक्तित्व विकास करने एवं उन्हें सुसंस्कारों की प्रेरणा देने हेतु नाट्य प्रशिक्षण एवं नाट्यमंचन।
- सामाजिक, आर्थिक रूप से दुर्बल वर्ग के वयस्कों, ग्रामीण, अपवंचित एवं अनाथ बालकों के कल्याण हेतु लघु–दीर्घ नाट्य कार्यशालाएँ एवं नाट्यमंचन।
- सन् 2001 से वर्तमान तक सामान्य वर्ग के लिए अभिनय एवं व्यक्तित्व विकास हेतु 25 बाल नाट्य कार्यशालाओं सहित 50 से अधिक नाट्य कार्यशालाओं का आयोजन।
- वयस्क वर्ग के 65 और बाल वर्ग के 25 नाटकों का मंचन।
- पाँच नाट्य समारोहों का आयोजन।
- उत्तर प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बाहर कुल 250 नुक्कड़ नाटकों का मंचन।
- साहित्य, लोक, पर्यावरण, चित्रकला एवं अन्य विषयक गोष्ठी, प्रदर्शनी।
- लखनऊ में बॉन्ड स्ट्रीट थिएटर न्यूयॉर्क, एक्ज़ाइल थिएटर काबुल और पूर्वाभ्यास थिएटर नई दिल्ली के कलाकारों को आमन्त्रित कर मलिन बस्ती के बच्चों के कल्याणार्थ नाट्यमंचन और नाट्यकार्यशालाओं का आयोजन।
- निसर्ग के रंगकर्म की स्तरीयता तथा सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय सरोकारों से प्रभावित होकर अनेक राष्ट्रीय–प्रादेशिक, शासकीय–अशासकीय संस्थाओं द्वारा सहयोग–

: ikUrjdkj&funs'kd yfyr çlkn ik[kfj;k

—frRo ifjp; –1984–1987 में भारत के प्रतिष्ठित नाट्य संस्थान भारतेन्दु नाट्य अकादमी उत्तर प्रदेश से 1 वर्षीय इन्टर्नशिप सहित नाट्य कला स्नातक।

–1988–89 में श्री राम सेन्टर रंगमण्डल नयी दिल्ली मैं अभिनेता एवं कार्यक्रम संयोजक तथा 1989–1995 में भारतेन्दु नाट्य अकादमी रंगमण्डल लखनऊ में वरिष्ठ कलाकार और दल–प्रमुख के रूप में अनुभव।

–1987 से लेकर अभी तक रंगमंच में अभिनेता, नाट्य लेखक, नाट्य निर्देशक, नाट्य शिक्षक और शोध अध्येता के रूप में कार्य।

–कुमाऊँ की लोक नाट्य शैली का विकास, थारू जनजाति और बुन्देलखण्ड की अनुसूचित जाति की अभिव्यक्तिपरक लोक परम्पराओं का नाट्य प्रयोग।

–वर्ष 2003–05 में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार से शोध–अध्ययन के लिए सीनियर फैलोशिप।

–अनाथ बच्चों, बेसहारा बच्चों, बाल संरक्षण गृह के बच्चों, रेलवे स्टेशन और बस स्टेशन में जीवन–संघर्ष करने वाले बच्चों को मानवीय स्पर्श देने के लिए रंगमंच के माध्यम से जन–जागरण का कार्य।

–अभी तक 144 नाटकों का निर्देशन, 87 नाटकों का लेखन, 100 नाट्य कार्यशालाओं का निर्देशन और 90 नाटकों के लगभग 550 मंचनों में अभिनय।

–दूरदर्शन और आकाशवाणी के लिए संस्कृति, पर्यावरण, स्वाधीनता आंदोलन, लोकशिल्प और कला पर आधारित वृत्तचित्रों और उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं पर आधारित धारावाहिकों का लेखन– निर्देशन।

–भारतेन्दु नाट्य अकादमी लखनऊ और हिमांचल कल्चरल रिसर्च फ़ोरम नाट्य अकादमी, मण्डी (हिमाचल प्रदेश) में तीन दशकों से अतिथि प्रशिक्षक।

çdkf'kr iqLrdsa &

1) नाटक – "दिल्ली 6" वाणी प्रकाशन 2008
2) नाट्य संग्रह "खोज" निसर्ग प्रकाशन 2017
3) नाट्य संग्रह "क्रान्तिपथ और कालापानी"

fulxZ çdk'ku 2020

1) काव्य संग्रह "संलाप" अंजुमन प्रकाशन 2022
(उपरोक्त के अतिरिक्त "कला – वसुधा" और "छायानट" पत्रिका में कुल 7 नाटक प्रकाशित)

–रंगमंच एवं अन्य सर्जनात्मक माध्यमों से सनातन संस्कृति के मूल्य व दर्शन का प्रचार–प्रसार करते हुए समाज के राष्ट्रधर्मी नैतिक विकास हेतु "निसर्ग" संस्था की स्थापना। 2001

&lEçfr lLFkkid v/;{k & *fulxZ* A funs'kd;

नाटक "आदिशक्ति रामशक्ति" आसुरी शक्तियों के विनाश के लिए स्वयं के भीतर दैवीय शक्तियों के जागरण का सन्देश देता है।

सनातन संस्कृति के दर्शन और मूल्यों पर बाहरी–भीतरी आसुरी शक्तियों के प्रकोप को दैवीय शक्तियों से पराजित किया जा सकता है। "आदिशक्ति रामशक्ति" नाटक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के द्वारा असुरराज रावण के विनाश हेतु अपने भीतर दैवीय शक्ति के जागरण को प्रस्तुत कर भारतवर्ष के जन–जन को इस कार्य के लिए प्रेरित करता है।

यह नाटक भारतवर्ष के भीतरी और बाहरी नकारात्मक तत्वों के द्वारा सनातन संस्कृति में वर्ग–भेद और जाति–भेद फैलाने के कुचक्र को नष्ट करने का सन्देश देता है।

राजवंशी श्री रामचन्द्र जी ने अनेक वनवासी जनजातियों को आत्मीय भाव से अपना भाई समान मित्र बनाया। उनके ज्ञान और शक्ति को मान–सम्मान दिया। उनके हृदय में मानवीय श्रेष्ठता की अनुभूति जगायी। इस प्रकार श्री रामचन्द्र जी ने वेदों के संदेश–

"समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः" और "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।" को अपने आचरण में ढालकर सम्पूर्ण संसार को सनातन संस्कृति के मूल दर्शन से परिचित कराया।

वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य में जातिवाद की आग फैलाकर सनातन संस्कृति को मिटाने का प्रयास कर रहे मानवद्रोही, भारतद्रोही आसुरी शक्तियों को वैदिक मानववाद से परिचित कराया है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं भारतवर्ष के भीतर राजनीतिक और सामाजिक कुचक्रों द्वारा सनातन संस्कृति में सदियों से जातिगत भेदभाव का झूठ प्रचारित किया गया है। सदियों से समाज को उच्च कुलों और निम्न कुलों में बाँटने का कुचक्र रचा जाता रहा है। तथाकथित उच्चकुलों द्वारा तथाकथित निम्नकुलों के शोषण और अमानवीय अत्याचार का विमर्श गढ़ा गया है। मानवताद्रोही – भारतद्रोही प्रपंची इतिहासकारों द्वारा इसे पूरे संसार में फैलाकर सनातन संस्कृति को नष्ट करने का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुत्सित प्रयास किया जाता रहा है। जबकि जातीय भेदभाव, शोषण और अत्याचार अद्वैतवादी सनातन संस्कृति की मूल भावना के विपरीत है।

रामायण के रचयिता आदि कवि महर्षि वाल्मीकि इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। तथाकथित निम्न कुल में उत्पन्न महर्षि वाल्मीकि सम्पूर्ण भारतीय जनमानस द्वारा पूजे जाते हैं। उन्होंने न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे संसार के मानवीय उत्थान के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के उच्च आदर्शो और मूल्यों की प्रतिस्थापन का अद्वितीय प्रयास किया है।

अतः महर्षि वाल्मीकि की जयन्ती के अवसर पर उनके पुण्यस्मरण के साथ–साथ राम के जीवन की आध्यात्मिकता को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करना अत्यन्त आवश्यक है।

dFkk lkj{ksi

राम द्वारा युद्ध में अनेक दिव्यास्त्रों का प्रयोग करने के पश्चात् भी रावण अपराजेय ही रह जाता है। राम की सेना घायल और मूर्छित होती रहती है। इस बात से राम बहुत ही गहन चिन्ता और शोक में डूब जाते हैं।

राम को लगता है कि अवश्य ही सृष्टि की आदिशक्ति रावण की ओर से युद्ध कर रही है। उनका यह दुख सेना के सामने प्रकट हो जाता है। तब हनुमान क्रोधित होकर देवी से युद्ध करने के लिए आकाश को उड़ जाते हैं।

देवी और हनुमान का भयंकर युद्ध होता है जिसे देखकर शंकर देवी को सचेत करते हुए कहते हैं कि इस युद्ध से आकाश में बहुत उथल–पुथल हो जाएगी लेकिन हनुमान को पराजित कर पाना असम्भव है। तुम माँ अंजना का रूप धारण करो। हनुमान के क्रोध को शान्त कर उसे पुनः पृथ्वी पर श्री राम के पास भेजो। देवी माँ अंजना का रूप धरकर हनुमान को समझाती हैं।

माँ के द्वारा समझाये जाने के पश्चात् हनुमान पृथ्वी पर पहुँचकर श्री राम के चरणों में गिर पड़ते हैं। तब विभीषण राम को उनके और उनकी सेना के पराक्रम की स्मृति दिलाते हैं। इसी प्रकार जामवन्त भी श्री राम को समझाते हैं। सभी सैनिक युद्ध में पूरा पराक्रम दिखलाने का संकल्प लेते हैं।

जामवन्त राम से विशेष रूप से कहते हैं रावण ने आराधना से जो शक्ति प्राप्त की है, आप उससे अधिक दृढ़ आराधना करके और अधिक शक्ति अर्जित कर रावण को पराजित कर सकते हैं। आप देवीदह नामक स्थान पर पाये जाने वाले एक सौ आठ विशेष कमल–पुष्पों से शक्ति जागरण के लिए विशेष पुरश्चरण करें। लक्ष्मण सहित हम सभी लोग रावण से युद्ध करते रहेंगे आप उसकी चिन्ता मत करें। तब हनुमान देवीदह से एक सौ आठ विशेष कमल ले आते हैं।

आदिशक्ति के गहन ध्यान में लीन होकर राम जब पुरुश्चरण में एक सौ सात कमल पुष्प अर्पित कर चुके होते हैं तो देवी चुपके से आकर अन्तिम कमल पुष्प उठाकर अन्तर्ध्यान हो जाती हैं। राम पुष्प न पाकर शोक में व्याकुल हो जाते हैं। सहसा उन्हें स्मरण हो आता है कि माँ कौशल्या उन्हें राजीवनयन अर्थात् कमलनयन कहा करती थी। इस प्रकार उनके पास अभी दो कमल शेष हैं। तब राम अपनी दायीं आँख चढ़ाने के लिए जैसे ही उस पर तीर लगाते हैं, देवी प्रकट होकर राम के हाथ से तीर ले लेती हैं और राम को विजयी होने का वरदान देती हैं।

ik=&ifjp;

छाया काव्य पाठ	– ललित सिंह पोखरिया
अभिनय–गायन/ नान्दी पाठ	– अंकित श्रीवास्तव, दर्शन जोशी, अभ्युदय तिवारी, हेमन्त सिंह, रजत के.राजवंशी, सोनू सिद्धार्थ, अभिजीत सिंह
राम	– सुमित श्रीवास्तव
लक्ष्मण	– अभिषेक सिंह
सीता	– ज्योति सिंह

जाम्बवान – अंकित श्रीवास्तव
सुग्रीव – दर्शन जोशी
हनुमान – अभ्युदय तिवारी
अंगद – हेमन्त सिंह
नल – रजत के. राजवंशी
नील – सोनू सिद्धार्थ
विभीषण – के.डी. जोशी
अन्य योद्धा गण – योगेन्द्र पाल, अमन सिंह, पीयूष राय
रावण – अविरल मिश्रा
शक्ति भीमा – अभिलाषा सिंह
शंकर – पीयूष राय
अंजना – मिन्नी दीक्षित

ikÜo! ep

मंच सज्जा निर्माण – शिव रतन और साथी
मंच निर्माण सहायक – रजत के.राजवंशी, सोनू सिद्धार्थ
मंच / हस्त सामग्री – अमन सिंह, अमितेश वैभव, अंकित राव
वेशभूषा अभिकल्पना – निशु सिंह, अंजलि शुक्ला
वेशभूषा व्यवस्था सहायक – योगेन्द्र पाल, अभय प्रताप सिंह, अंकित राव
प्रकाश संचालन – सुजीत सिंह यादव, मनीष सैनी
उपकरण संयोजन सहायक – हेमन्त सिंह, दर्शन जोशी
मुख सज्जा – शहीर अहमद, सचिन
संगीत परिकल्पाना एवं पार्श्व गायन–वादन – ललित सिंह पोखरिया
ध्वन्यांकित संगीत संचालन – हिमांशु कश्यप
प्रचार–प्रसार व पार्श्व कार्य – अभ्युदय तिवारी, अंकित श्रीवास्तव
वीडियोग्राफ़ी–फ़ोटोग्राफ़ी – दर्शन स्टूडियो
बाह्य व्यवस्था प्रभारी – अनुराग शुक्ला शिवा
बाह्य व्यवस्था सहायक – चन्दन सिंह पोखरिया
प्रस्तुति दल – योगेन्द्र पाल, अमन सिंह, पीयूष राय, अभय प्रताप सिंह, अंकित राव
बाह्य व्यवस्था दल – हिमांशु राय, जान्ह्वी कश्यप, कृष्ण श्रीवास्तव, अनस ख़ान, अमितेश वैभव, विकास दिवाकर
युद्ध–दृश्य संयोजन – अभिजीत सिंह

आलेख, परिकल्पना व निर्देशन

yfyr ¢lg ik[kfj;k

fo'k"k vkHkkj

♦सर्वश्री शिरीष तिवारी ♦अंशु टण्डन ♦कौस्तुभ आनन्द चन्दोला ♦के.के. अग्रवाल ♦भानु प्रकाश पाण्डेय ♦अमित द्विवेदी ♦श्रीमती शालिनी उपाध्याय ♦श्री रामलीला समिति कल्याणपुर, लखनऊ ♦मंचकृति समिति लखनऊ ♦पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ ♦समस्त कर्मचारी सन्त गाडगे प्रेक्षागृह, उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी।